संस्कृत विभाग

DEPARTMENT OF SANSKRIT

कला, संचार एवं भाषा संकाय

SCHOOL OF ARTS, COMMUNICATION AND LANGUAGES

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप

According to NEP 2020

चतुर्वर्षीय स्नातक कक्षा के प्रथम वर्ष का पाठ्यक्रम

1st YEAR'S SYLLABUS OF

FOUR–YEAR UNDER GRADUATION

PROGRAMME

2025–2026 से प्रवृत्त

W.E.F.

SESSION 2025–2026

हेमवती नन्दन बहुगुणा गढवाल विश्वविद्यालय

(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

श्रीनगर गढवाल, उत्तराखण्ड

HEMVATI NANDAN BAHUGUNA GARHWAL UNIVERSITY

(A CENTRAL UNIVERSITY)

SRINAGAR GARHWAL, UTTARAKHAND

COURSE STRUCTURE FOR FIRST YEAR UG (FYUP)

UNDER NEP–2020

HNBGU

Course Category	Semester-I				Semester-II		
	Subject/Title	No. of paper	Credits		Subject /Title	No. of paper	Credits
Discipline Specific core	DSC Subject-I (Major)	1	4		DSC Subject-I	1	4
	DSC Subject-II (Minor)	1	4		DSC Subject-II	1	4
MD/I.D (Subject-1)	MD-I/ ID-I	1	4		MD-II/ ID-II	1	4
MD/ID (Subject-2)	MD-I/ ID-I	1	3		MD-II/ ID-II	1	3
SEC/AEC	Field work/SEC/ Communication Skills or AMSC/Field Work/SEC	1	3		AMSC/Field work/SEC or Field Work/SEC/ Communication Skills	1	3
VAC	Understanding and Connecting with Environment Or Life Skills & Personality Development	1	2		Understanding and Connecting with Environment Or Life Skills & Personality Development	1	2
Total		6	20			6	20
NHEQF Level 4.5	Student on exit after successfully completing first year (i.e., securing minimum required 40 credits + 4 Credits in one Vocational Course/Skills-Enhancement Course of 4 credits) will be awarded "Undergraduate Certificate" of one year, in related field/discipline/subject.						

- The student may opt for any one course from Field Work/ Skill Enhancement Course (SEC)/ Communication Skills in one semester, and any one course from Additional Multidisciplinary Skill Course (AMSC)/ Field Work/ Skill Enhancement Course (SEC) in the other semester.
- Field Work/Discipline Specific Skill Enhancement Course (SEC)- [SEC related to any one discipline subject opted by student as a DSC in the first year].
  In addition to providing students with practical, experience-based learning, fieldwork aims to expose them to real-world socio-economic and societal challenges, allowing them to bridge the gap between theory and practice and develop effective solutions to real-life problems.

- **AMSC:** Additional Multidisciplinary Skill Course (is offered as SEC) Following are the courses offered under AMSC under the FYUP, University may add new courses under AMSC in future:
  1. Plant Nursery Development and Management
  2. Basic Yoga Practices
  3. Physical Education and Sports Management
  4. Regional Folklores and their Cultural Context
  5. Indian Traditional Music
  6. Tour and Travel Operations
- **Communication Skills** (AEC): Communication Skills course will be offered in Hindi, English and Sanskrit Languages, student may opt any one language for studying the course
- Life Skill & Personality Development (VAC)
- Understanding and Connecting with Environment (VAC)

Program Learning Outcomes for B.A. Program: –

यूजीसी की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 और यूजीसी (स्नातक डिग्री और स्नातकोत्तर डिग्री के अनुदान के लिए निर्देश के न्यूनतम मानक) विनियम, 2025 के अनुसार **बैचलर ऑफ आर्ट्स (स्नातक) कार्यक्रम** का उद्देश्य बौद्धिक विकास, आलोचनात्मक सोच और सामाजिक योगदान को बढ़ावा देने वाली बहु–विषयक, बहु–आयामी और समग्र शिक्षा प्रदान करना है।

बी.ए. कार्यक्रम को सफलतापूर्वक उत्तीर्ण करने के बाद, विद्यार्थी निम्नलिखित में सक्षम होंगे–

1. व्यापक ज्ञान का प्रदर्शन: छात्र सम्बन्धित विषय में मूल अवधारणाओं, सिद्धान्तों और पद्धतियों की गहन समझ प्राप्त करेंगे, साथ ही अन्तःविषयक परिप्रेक्ष्यों को एकीकृत करेंगे।

2. आलोचनात्मक सोच और समस्या–समाधान क्षमताएं: छात्र जटिल सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक मुद्दों का मूल्यांकन करने तथा नवीन, नैतिक और व्यावहारिक समाधान प्रस्तावित करने के लिए विश्लेषणात्मक और आलोचनात्मक विचार–कौशल का अनुप्रयोग करेंगे।

3. प्रभावी संचार और पारस्परिक कौशल: छात्र विविध व्यावसायिक और सामाजिक सन्दर्भों में विचारों, शोध निष्कर्षों और तर्कों को स्पष्ट और प्रभावी रूप से व्यक्त करने के लिए लिखित, मौखिक और दृश्य–संचार में प्रवीणता प्रदर्शित करेंगे।

4. शोध और विश्लेषणात्मक क्षमताएं: छात्र सैद्धान्तिक और अवधारणात्मक ढांचों द्वारा निर्देशित, वास्तविक जीवन की समस्याओं का समाधान करने के लिए उपयुक्त गुणात्मक और मात्रात्मक विधियों का उपयोग करके शोध जिज्ञासाओं की रूपरेखा का निर्माण और क्रियान्वयन करेंगे।

5. नैतिक और सामाजिक जिम्मेदारी: छात्र नैतिक प्रथाओं, सामाजिक न्याय और सतत विकास के प्रति सम्मान प्रदर्शित करेंगे, सामाजिक उन्नति में योगदान देंगे तथा राष्ट्रीय और वैश्विक चुनौतियों का समाधान करेंगे।

6. अन्तःविषयक दृष्टिकोण और क्षमता: छात्र सामाजिक मुद्दों पर व्यापक परिप्रेक्ष्य प्राप्त करने और बहु–विषयक समस्या–समाधान को बढ़ावा देने के लिए सम्बन्धित क्षेत्रों से ज्ञान का एकीकरण करेंगे।

7. रोजगार क्षमता और आजीवन सीखना: छात्र सरकारी, गैर–लाभकारी, शैक्षणिक या निजी क्षेत्रों में विविध आजीविका पथ को आगे बढ़ाने के लिए सामूहिक कार्य, नेतृत्व और अनुकूलन क्षमता सहित व्यावसायिक कौशल विकसित करेंगे और इस निरन्तर गतिशील विश्व में प्रासंगिक बने रहने के लिए आजीवन सीखने में संलग्न रहेंगे।

8. वैश्विक और सांस्कृतिक जागरूकता: छात्र वैश्विक और सांस्कृतिक विविधता को समझेंगे और उसकी प्रशंसा करेंगे, इस ज्ञान को स्थानीय, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय सन्दर्भों में रचनात्मक रूप से संलग्न करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगे।

DEPARTMENT OF SANSKRIT (HNBGU)
COURSE STRUCTURE FOR FIRST YEAR UG (FYUP)
UNDER NEP–2020

1st Semester (प्रथम सत्र)–

Course Category	Paper's Title	Credit
DSC-I	नीतिकाव्य, व्याकरण एवं अनुवाद	4
MD-I	संस्कृत साहित्य में राष्ट्रीय चेतना	4
SEC (Skill Enhancement Course)	आयुर्वेद का सामान्य परिचय	3
VAC	जीवन कौशल एवं व्यक्तित्त्व विकास	2

2nd Semester (द्वितीय सत्र)–

Course Category	Paper's Title	Credit
DSC-II	नाटक, छन्द एवम् अलंकार	4
MD-II	संस्कृत साहित्य में नैतिकता	4
AEC (Communication Skills)	संस्कृत सम्भाषण दक्षता	3
VAC	पर्यावरणीय सम्पर्क एवं संज्ञान	2

SYLLABUS OF FYUP
(DEPARTMENT OF SANSKRIT)

1st Semester (प्रथम सत्र)–

DSC–I :

नीतिकाव्य, व्याकरण एवं अनुवाद **CREDITS – 04**

COURSE OUTCOMES:

CO1:	छात्र नीतिशतक एवं हितोपदेश के श्लोकों तथा संज्ञा और सन्धि प्रकरण के मूल नियमों को स्मरण करेंगे।
CO2:	छात्र जीवनोपयोगी नैतिक–सिद्धान्तों एवं संस्कृत भाषा में सन्धियों के प्रयोग को समझेंगे।
CO3:	संज्ञाओं के सम्यक् ज्ञान से संस्कृत से हिन्दी एवं हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद करने में गति बनेगी।
CO4:	नीतिशतक एवं हितोपदेश के नीतिश्लोकों के माध्यम से छात्र जीवन में आने वाली विभिन्न परिस्थितियों का सम्यक् विश्लेषण कर सकेंगे।
CO5:	छात्र नीतिकाव्यों में निहित नैतिक मूल्यों को अपने जीवन में आत्मसात् करेंगे तथा संस्कृत व्याकरण के सम्यक् ज्ञान द्वारा संस्कृत शास्त्रों के सही अर्थ को जान पाएंगे।

इकाई–1 : नीतिशतक (1–50 श्लोक)

इकाई–2 : हितोपदेश (मित्रलाभ)

इकाई–3 : व्याकरण (संज्ञा–प्रकरण लघुसिद्धान्तकौमुदी के अनुसार)

इकाई–4 : हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद

पाठ्य पुस्तकें एवं सन्दर्भ–ग्रन्थ–

1. नीतिशतकम्, व्याख्याकार एवं सम्पादक– डॉ. बाबूराम त्रिपाठी, महालक्ष्मी प्रकाशन, आगरा
2. नीतिशतकम्, अनुवादक और संस्कर्ता– जनार्दन शास्त्री पाण्डेय, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
3. नीतिशतकम्, डॉ. राकेश शास्त्री, परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली
4. हितोपदेश–मित्रलाभः (अश्लीलांशवर्जितः) व्याख्याकार– आचार्य श्रीशेषराज शर्मा 'रेग्मी', चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
5. हितोपदेशः भाषान्तरकार– पं रामेश्वर भट्ट, सम्पादक– श्री नारायण राम आचार्य 'काव्यतीर्थ', चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली
6. लघुसिद्धान्तकौमुदी, भाग–1, व्याख्याकार– भीमसेन शास्त्री, भैमी प्रकाशन, दिल्ली

7. लघुसिद्धान्तकौमुदी, व्याख्याकार– पं. ईश्वरन्द्र, संस्कृत ग्रन्थागार, दिल्ली

MD–I:

संस्कृत साहित्य में राष्ट्रीय चेतना **CREDITS – 04**

COURSE OUTCOMES:

CO1:	छात्र संस्कृत–साहित्य में विद्यमान राष्ट्रीय चेतना विषयक सन्दर्भों का अध्ययन करेंगे।
CO2:	छात्र संस्कृत–साहित्य में विद्यमान राष्ट्रीय चेतना विषयक सन्दर्भों के अनुप्रयोग को समझेंगे।
CO3:	राष्ट्रीय चेतना की भारतीय अवधारणाओं को अपने जीवन में उतार सकेंगे।
CO4:	राष्ट्रीय चेतना की आधुनिक एवं प्राचीन भारतीय अवधारणाओं का सम्यक् विश्लेषण कर सकेंगे।
CO5:	छात्र राष्ट्र–प्रेम के वास्तविक अर्थ का उचित मूल्यांकन करते हुए उसे आत्मसात् करेंगे।

इकाई–1 : वैदिक साहित्य में राष्ट्रीय चेतना

(ऋग्वेद 3.53.12, 3.53.24; अथर्ववेद.1.29.1–4; 12.1.1–12, 19.41.1;
शुक्लयजुर्वेद 22.22)

इकाई–2 : पुराण एवं महाकाव्यों में राष्ट्रीय चेतना

(विष्णु पुराण 2.3; वाल्मीकि रामायण, किष्किन्धा काण्ड, अध्याय 46–48;
महाभारत शान्तिपर्व 56.5, 65.13–22)

इकाई–3 : नीतिग्रन्थों में राष्ट्रीय चेतना

सप्ताङ्ग सिद्धान्त (कौटिल्य अर्थशास्त्र 6.1, शुक्रनीति 1.61–62)

इकाई–4 : आधुनिक संस्कृत साहित्य में राष्ट्रीय चेतना

मातृभूमिस्तवः– डॉ. कपिलदेव द्विवेदी
भाति में भारतम् (1–10 श्लोक) डॉ. रमाकांत शुक्ल
देशोऽयं कुरुते प्रोन्नतिम् – डॉ. हरिनारायण दीक्षित

पाठ्य पुस्तकें एवं सन्दर्भ–ग्रन्थ–

1. ऋग्वेद, यजुर्वेद एवं अथर्ववेद भाष्य, श्रीपाद दामोदर सातवलेकर, स्वाध्याय मण्डल, पारड़ी, महाराष्ट्र
2. कौटिल्य अर्थशास्त्रम्, हिन्दी अनुवादक– उदयवीर शास्त्री, मेहरचन्द लक्षमनदास, दिल्ली
3. महाभारत (1–6 भाग), हिन्दी अनुवादक– रामनारायण दत्त शास्त्री पाण्डेय, गीताप्रेस, गोरखपुर
4. शुक्रनीति, व्याख्याकार पण्डित ब्रह्मशंकर मिश्र, चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी
5. श्रीमद्वाल्मीकीयरामायणम् (1–2 भाग), हिन्दी अनुवाद सहित, सम्पादक–जानकी नाथ शर्मा, गीताप्रेस, गोरखपुर
6. पुराण विमर्श, आचार्य बलदेव उपाध्याय, चौखम्बा विद्याभवन,वाराणसी
7. संस्कृत साहित्य में राष्ट्रवाद एवं भारतीय राजशास्त्र, शशि तिवारी, विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली

8. संस्कृत साहित्य में राष्ट्रीय भावना, हरिनारायण दीक्षित, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली
9. संस्कृत वाङ्मय में राष्ट्रीय चेतना, डॉ. विजय कुमार कर्ण, हिन्दुस्तान एकेडमी, प्रयागराज
10. राष्ट्रगीतांजलि, डॉ कपिलदेव द्विवेदी, विश्वभारती अनुसन्धान परिषद्, वाराणसी
11. भाति में भारतम्, डॉ. रमाकान्त शुक्ल, देववाणी परिषद्, दिल्ली

SEC (Skill Enhancement Course):

आयुर्वेद का सामान्य परिचय **CREDITS – 03**

COURSE OUTCOMES:

CO1:	छात्र संस्कृत–साहित्य में विद्यमान आयुर्वेद विषयक सन्दर्भों का अध्ययन करेंगे।
CO2:	छात्र जीवनोपयोगी आयुर्वेद के सिद्धान्तों एवं षड्–ऋतुचर्या के प्रयोग को समझेंगे।
CO3:	आयुर्वेद के स्वास्थ्य सम्बन्धी दिशा–निर्देशों का पालन कर सकेंगे।
CO4:	आयुर्वेद के ज्ञान का उपयोग करके छात्र अपने नित्यप्रति के जीवन में होने वाले रोगों तथा उनके निदान के प्रारम्भिक उपायों का विश्लेषण कर सकेंगे।
CO5:	छात्र आयुर्वेद में निहित स्वास्थ्य सम्बन्धी तथ्यों को अपने जीवन में आत्मसात् करके एक स्वस्थ समाज के निर्माण में सहायक सिद्ध होंगे।

इकाई–1 : **आयुर्वेद का इतिहास एवं प्रमुख आचार्य**
(चरक, सुश्रुत, धन्वन्तरि, वाग्भट्ट)

इकाई–2 : **आयुर्वेद के प्रमुख दो सम्प्रदाय**

- आत्रेय संप्रदाय (काय चिकित्सा)
- धन्वन्तरि संप्रदाय (शल्य चिकित्सा)

इकाई–3 : **चरक संहिता** (सूत्रस्थान– प्रथम दीर्घजीवितीय अध्याय)

इकाई–4 : **षड्–ऋतुचर्या**

पाठ्य पुस्तकें एवं सन्दर्भ–ग्रन्थ–

1. चरक संहिता, व्याख्याकार– डॉ. ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
2. आयुर्वेद का इतिहास, कविराज वागीश्वर शुक्ल, चौखम्बा अमरभारती प्रकाशन, वाराणसी
3. वेदों में आयुर्वेद, वैद्य पं. राम गोपाल शास्त्री, परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली
4. आयुर्वेद का वैज्ञानिक इतिहास, आचार्य प्रियव्रत शर्मा, चौखम्बा ओरियन्टालिया, वाराणसी

VAC:

जीवन कौशल एवं व्यक्तित्व विकास **CREDITS – 02**

(विश्वविद्यालय द्वारा)

SYLLABUS OF FYUP
(DEPARTMENT OF SANSKRIT)
2nd Semester (द्वितीय सत्र)–

DSC–II :

नाटक, छन्द एवम् अलंकार **CREDITS – 04**

COURSE OUTCOMES:

CO1:	छात्र अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक का अध्ययन करेंगे।
CO2:	छात्र अभिज्ञानशाकुन्तलम् में प्रयुक्त नाट्यशास्त्रीय तत्त्वों के अनुप्रयोग एवम् उनकी परिभाषाओं को समझेंगे।
CO3:	अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक में प्रयुक्त अलंकार एवं छन्दयोजना को लक्षणोदाहरण सहित जानेंगे।
CO4:	अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के ऐतिहासिक, सामाजिक, राजनैतिक आयामों का सम्यक् विश्लेषण कर सकेंगे।
CO5:	संस्कृत काव्य–परम्परा में महाकवि कालिदास के योगदान का उचित मूल्यांकन कर सकेंगे।

इकाई–1 : नाटक–

(अभिज्ञानशाकुन्तलम् चतुर्थ अंक पर्यन्त)

इकाई–2 : नाटकीय पारिभाषिक शब्दावली–

(नान्दी, प्रस्तावना, सूत्रधार, विदूषक, नेपथ्य, स्वगत, जनान्तिक, आकाशभाषित, भरतवाक्य)

इकाई–3 : अलंकार– (उदाहरण अभिज्ञानशाकुन्तलम् से)

(अनुप्रास, श्लेष, यमक, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अपह्नुति, विभावना, विशेषोक्ति, निदर्शना)

इकाई–4 : छन्द– (उदाहरण अभिज्ञानशाकुन्तलम् से)

(अनुष्टुप्, आर्या, इन्द्रवजा, उपेन्द्रवजा, वंशस्थ, बसन्ततिलका, शिखरिणी, शार्दूलविक्रीडित)

पाठ्य पुस्तकें एवं सन्दर्भ–ग्रन्थ–

1. अभिज्ञानशाकुन्तलम्, व्याख्याकार एवं सम्पादक– डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, रामनारायणलाल विजयकुमार, इलाहाबाद
2. अभिज्ञानशाकुन्तलम्, सम्पादक– निरुपण विद्यालंकार, साहित्य भण्डार, मेरठ

3. काव्यप्रकाश (हिन्दी अनुवाद सहित) व्याख्याकार और सम्पादक– डॉ. श्रीनिवास शास्त्री, साहित्य भण्डार, मेरठ
4. वृत्तरत्नाकर, पं० केदारभट्ट, व्याख्या– पं. बलदेव उपाध्याय, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
5. दशरूपक, व्याख्याकार– डॉ. भोलाशंकर व्यास, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी

MD–II:

संस्कृत साहित्य में नैतिकता **CREDITS – 04**

COURSE OUTCOMES:

CO1:	छात्र ईशावास्योपनिषद्, श्रीमद्भगवद्गीता, हितोपदेश और नीतिशतक में वर्णित नैतिक मूल्यों का ज्ञान प्राप्त करेंगे।
CO2:	निम्नलिखित ग्रन्थों के सन्दर्भों के आधार पर मानवीय व्यवहार को समझने का प्रयास करेंगे।
CO3:	ईशावास्योपनिषद् से त्यागपूर्वक उपभोग के आदर्श, हितोपदेश से मानव मूल्य, नीतिशतकम् से आत्मसम्मान एवं श्रीमद्भगवद्गीता से स्वधर्म और स्थितप्रज्ञता को जीवन में आत्मसात् करने का प्रयास करेंगे।
CO4:	निम्नलिखित ग्रन्थों के आधार पर विभिन्न प्रसंगों का विश्लेषण कर सकेंगे।
CO5:	निम्नलिखित ग्रन्थों में वर्णित विभिन्न नैतिक मूल्यों का समसामयिक दृष्टि से मूल्यांकन कर सकेंगे।

इकाई–1: **ईशावास्योपनिषद् (**1–11)

इकाई–2: **हितोपदेश** (कथामुख)

इकाई–3: **नीतिशतकम् –**

I. विद्वत – प्रशंसा (20,21)
II. सत्संगति (23,24,62)
III. परोपकार (74,75,77)

इकाई–4 : श्रीमद्भगवद्गीता–

I. आत्मप्रबन्धन (6/5,6)
II. निष्काम कर्म (2/47,3/19)
III. स्थितप्रज्ञ (2/54–56,71)

पाठ्य पुस्तकें एवं सन्दर्भ–ग्रन्थ–

1. श्रीमद्भगवद्गीता (परिच्छेद,अन्वय साधारण भाषाटीका सहित) व्याख्याकार– जयदयाल गोयन्दका, गीताप्रेस, गोरखपुर
2. श्रीमद्भगवद्गीता (सामर्पण–भाष्य), भाष्यकार– स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती, राधेलाल सराफ एण्ड सन्स चैरिटेबल ट्रस्ट, मेरठ
3. ईशोपनिषद्, व्याख्याकार– महात्मा नारायण स्वामी, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली
4. ईशावास्योपनिषद् (सानुवाद शांकरभाष्यसहित) गीताप्रेस, गोरखपुर
5. नीतिशतकम्, व्याख्याकार एवं सम्पादक– डॉ. बाबूराम त्रिपाठी, महालक्ष्मी प्रकाशन, आगरा
6. नीतिशतकम्, अनुवादक और संस्कर्ता– जनार्दन शास्त्री पाण्डेय, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
7. नीतिशतकम्, डॉ. राकेश शास्त्री, परिमल पब्लिकेशन्स , दिल्ली
8. हितोपदेश–मित्रलाभः (अश्लीलांशवर्जितः) व्याख्याकार– आचार्य श्रीशेषराजशर्मा 'रेग्मी', चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
9. हितोपदेशः, भाषान्तरकार–पं रामेश्वर भट्ट, सम्पादक– श्री नारायण राम आचार्य 'काव्यतीर्थ', चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली

AEC (Communication Skills):

संस्कृत सम्भाषण दक्षता **CREDITS 03**

COURSE OUTCOMES:

CO1:	छात्र संस्कृत–भाषा के सम्भाषण के लिए उपयुक्त शब्दरूप, धातुरूप आदि को स्मरण करेंगे।
CO2:	छात्र संस्कृत भाषा की वाक्य–संरचना से परिचित होंगे तथा उसके व्यावहारिक प्रयोग को समझेंगे ।
CO3:	शब्दरूप, धातुरूप आदि के सम्यक् ज्ञान से संवाद एवं लेखन में गति बनेगी।
CO4:	छात्र संस्कृत–भाषा की शुद्धता एवं अशुद्धता का विश्लेषण कर उचित प्रयोग को जानेंगे।
CO5:	छात्र संस्कृत सम्भाषण में दक्षता प्राप्त कर संस्कृत सम्भाषण में कुशलता प्राप्त कर सकेंगे ।

इकाई–1 : संवाद कौशल–

(संस्कृत में दैनिक व्यवहार)

इकाई–2 : लेखन कौशल

(संस्कृत में पत्र लेखन–पिता के लिए, पुस्तक विक्रेता के लिए, आमन्त्रण–पत्र)

इकाई–3 : शब्दरूप, धातुरूप एवं संख्या

शब्दरूप– राम, हरि, गुरु, पितृ, रमा, नदी, मातृ, फल, तत्, किम्

धातुरूप– अस्, भू, गम् पठ, दृश्
1 से 100 तक संस्कृत संख्या

इकाई–4 : संस्कृत व्यावहारिक शब्दावली

(वस्तु, शरीर के अंग, पशु–पक्षियों के नाम)

पाठ्य पुस्तकें एवं सन्दर्भ–ग्रन्थ–

1. प्रौढ़रचनानुवादकौमुदी, डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
2. रचनानुवादकौमुदी, डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
3. बृहदनुवाचन्द्रिका, चक्रधर नौटियाल 'हंस' शास्त्री, मोती लाल बनारसीदास, दिल्ली
4. लघुसिद्धान्तकौमुदी, भाग–1, व्याख्याकार– भीमसेनशास्त्री, भैमी प्रकाशन, दिल्ली
5. पत्राचार द्वारा संस्कृतम् (प्रवेश) संस्कृत भारती, हरिद्वार
6. संस्कृत–व्यवहार–साहस्री, संस्कृत भारती, माता मन्दिर गली, झण्डेवालान, नई दिल्ली
7. व्यावहारिक संस्कृत प्रशिक्षक, डॉ० विजय कुमार कर्ण, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ

VAC:

पर्यावरणीय सम्पर्क एवं सज्ञान **CREDITS – 02**

(विश्वविद्यालय द्वारा)